संपादकीय

प्रकृति एवं हम

भले ही आधुनिक युग वैज्ञानिक युग के नाम से जाना जाता है परंतु मानव जीवन के मूल में प्रकृति ही है । प्रकृति के द्वारा ही मानव की मूलभूत आवश्यकताओं की पूर्ति संभव है अर्थात् जल, वायु, भोजन, आवास आदि की सुविधाओं की पूर्ति में प्रकृति अपना अहम योगदान प्रदान करती है । प्रकृति की शाश्वतता द्वारा हमें नवोन्मेषी विचारों की प्राप्ति होती है ।

प्रकृति से मानव का चिरकालीन संबंध रहा है । दोनों ही एक–दूसरे के पूरक कहलाते हैं । हमारा प्यारा भारतवर्ष कृषि प्रधान राष्ट्र है जिसे नदियों का देश भी कहा जाता है । प्रकृति मानव जीवन की न केवल सहचरी है बल्कि इसी पर मानव जीवन का अस्तित्व कायम है । प्रकृति को साहित्य में भी जीवन का आधार माना जाना प्रकृति के महत्त्व को उद्घाटित करता है । आदिकाल से आधुनिक काल तक रचित प्रत्येक काल की रचनाओं में प्रकृति को बहुतायत से समावेश होना प्रकृति के महत्त्व को स्पष्ट करता है । रचनाएँ भले ही किसी भी भाषा एवं बोली में अथवा विधा में रचित हो प्रकृति इसके केंद्र में निहित होती है ।

प्रकृति की महिमा का व्याख्यान हमें संस्कृत साहित्य के महाकवि माने जाने वाले कवि कालिदास द्वारा रचित नाटक 'अभिज्ञान शाकुंतलम्' के मंगला चरण में शिव वंदना के द्वारा प्रकृति के सौंदर्य वर्णन द्वारा किया गया है यथा–

"या सृष्टि सृष्टराद्या, वहति विधिहुतं याहविर्या च होत्री,
ये द्वे काल विधतः श्रुतिविषयगुणा या स्थिताव्याप्त विश्वम्!
यामाहः सर्व बीज प्रकृतिरिति यहा प्राणिनः प्राणवन्त
प्रत्याक्षाभिः प्रपन्नस्तनभिरवत् वस्ताभिरष्टभिरिशः ।।"

आधुनिक युग के छायावाद काल की यदि बात की जाए तो यह काल अधिकांशतः प्रकृति को आधार बनाकर रचनाएँ करने वाला काल मान जाता है इस काल के प्रमुख कवि एवं

रचनाकार माने जाने वाले चारों रचनाकार– जयशंकर प्रसाद, सुमित्रानंदन पंत, सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' एवं महादेवी वर्मा प्रकृति को अत्यंत महत्त्वपूर्ण मानते हैं । सुमित्रानंदन पंत को तो प्रकृति का सुकुमार कवि कहा जाता है । जयशंकर प्रसाद ने कालजयी रचना 'कामायनी' में प्रकृति को महत्त्व प्रदान करते हुए लिखा है–

"हिमगिरि के उत्तुंग शिखर पर
बैठ शिला की शीतल छाह
एक पुरूष भीगे नयनों से
देख रहा था प्रलय प्रवाह ।"

प्रस्तुत पत्रिका का प्रकाशन जून माह में किया जा रहा है जो कि प्रकृति के प्रति प्रत्येक जन की जिम्मेदारी को दर्शाता है । 5 जून 'पर्यावरण दिवस' के रूप में मनाये जाने के पीछे पर्यावरण की स्वच्छ एवं निर्मल बनाये रखने तथा प्रकृति के संरक्षण को ध्यान में रखकर किया जा रहा है । प्रकृति और मानव का साहचर्य हमारी सृष्टि के प्रारंभ से रहा है । साहित्य लेखन हेतु भी प्रकृति द्वारा मनमोहक दृश्य प्रदान किए हैं । सृष्टि निर्माण हेतु आवश्यक पंचतत्व द्वारा मानव सृजन मानव के जीवन में प्रकृति के महत्व को और अधिक बढा देता है ।

प्रकृति का कण–कण अपनी अलग आभा से युक्त है एवं अत्यंत मनमोहक है । इक्कीसवीं सदीं में रचित समूचे साहित्य में प्रकृति–चित्रण एवं पर्यावरण चेतना की केंद्रित किया गया है ।

इस पत्रिका के संपादन का परम उद्देश्य समस्त पाठकों एवं समाज को प्रकृति के महत्त्व से समय रहते अवगत कराना है ताकि हम सभी अपने–आने वाली पीढ़ी को स्वच्छ एवं हरित वातावरण अथवा पर्यावरण प्रदान कर प्राकृतिक आपदाओं से बचाव कर सके । प्रकृति को बचाये रखना एवं वातावरण को स्वच्छ रखने हेतु अधिक वृक्षारोपण करना हम सभी का अहम कर्तव्य है जिसके लिए हमें सजग एवं कर्मठ होकर प्रकृति को बचाना चाहिए ।

प्रधान संपादक

डॉ. संतोष कांबळे